डॉ. विवेक मणि त्रिपाठी

(Vivek Mani Tripathi, Xitoyda Hindi tili)

https://doi.org/10.5281/zenodo.7396106

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (हिंदी)
क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय ,चीन
Assistant professor (Hindi)
Quangtong Foreign Language University, China
Email: Vivekmani.bhu@gmail.com
vmtripathi@gdufs.edu.cn,
Phone: +91 -9958550683 (India)
+86 -18666279640 (चीन)

ANNOTATION

The article provides information on issues such as the history of Indo-Chinese relations, the teaching of the Hindi language in China, and the study of Gandhi's activities at the Gandhi Center.

***Key words**: Indo-Chinese, Gandhi center, Hindi language, family education center, medicine.*

ANNOTATSIYA

Maqolada hind-xitoy aloqalari tarixi, xitoyda hindi tilining o'qitilishi, Gandi markzida Gandi faoliyatining o'gganilishi kabi masalalar haqida ma'lumotlar berilgan.

***Kalit so'zlar**: xind-xitoy, gandi markazi, hindi tili, oily ta'lin dargohi, medisina.*

परिचय – डॉ.विवेक मणि त्रिपाठी भारत के बिहार राज्य के रहने वाले हैं i **सम्प्रति** वर्ष 2015 से चीन के क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में **सहायक प्रोफेसर** (हिंदी) के पद पर कार्यरत है । भारत से चीनी साहित्य में स्नातकोत्तर तथा हिंदी उपन्यास मैला आंचल तथा चीनी उपन्यास पाय लू का मैदान में चित्रित ग्रामीण समाज विषय पर चीन से पीएचडी की डिग्री प्राप्त i वर्ष 2019 तथा 2022 में चीन में शिक्षा में विशेष योगदान के लिए **चीन के राष्ट्रपति पुरस्कार** के लिए नामित i 2021 में क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय द्वारा दूसरी बार **"उत्कृष्ट अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार** " प्राप्त i आर्यावर्त शोध पत्रिका के **सहायक संपादक** , अक्षरा

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

बहुविषयक शोध जर्नल के **सह– संपादक** , समागम शोध जर्नल एवं शोध ऋतू जर्नल के **सम्पादन मंडल के सदस्य**, HORIZON बहु विषयक शोध जर्नल में हिंदी शोध पत्रों के लिए समीक्षक के रूप में जुड़े हुए हैं i वैश्विक संस्कृत मंच (ग्लोबल संस्कृत फोरम) के **अंतर्राष्ट्रीय संयोजक** हैं i अनंत शोध सृजन शोध पत्रिका से अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार के रूप में जुड़े हुए हैं i भारत–चीन के विभिन्न शोधजर्नल में "हिन्दू धर्म में पर्यावरण सुरक्षा", "भारत–चीन सम्बन्ध में योग का अनुवाद", "मैला आँचल में स्त्री विमर्श", "भारत-चीन के मध्य दो सहस्त्र वर्ष के सांस्कृतिक आदानप्रदान का इतिहास", " चीन में हिंदी शिक्षण", आदि विषयों पर आलेख प्रकाशितi

चीन में हिंदी की दशा एवं दिशा

भारत- चीन संबंध दो सहस्त्र वर्ष पुराना है , इन दो हज़ार वर्षों में दोनों देशों ने अपनी महान संस्कृति से एक दुसरे को प्रभावित किया है i भारत –चीन संबंध में भाषाई आदानप्रदान का विशेष महत्व है i एक – दुसरे की भाषा सीखकर ही दोनों देशों के पूर्वजों ने हमारे लिए एक दीर्घ एवं समृद्ध मित्रता की नीवं रखी है i कालांतर में भारत की भाषा संस्कृत थी , तो चीनी विद्वत समाज संस्कृत भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति का अध्ययन करता था , वर्तमान समय में भारत में संस्कृत भाषा का स्थान हिंदी ने ले लिया है, इसलिए चीन में हिंदी के माध्यम से भारतीय संस्कृति को समझा जा रहा है i चीन में अभी हिंदी की स्थिति बहुत ही सम्मानजनक है i अभी चीन के १७ विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा में स्नातक स्तर पर पढाई हो रही हैं, जिनमें तीन विश्ववविद्यालयों में हिंदी में स्नातकोत्तर स्तर पर , एक विश्ववविद्यालय में पीएचडी स्तर भी पढाई हो रही है, जो वर्ष २००३ तक केवल तीन विश्वविद्यालयों तक सीमित थी i लगभग १५ विश्वविद्यालयों में भारत अध्ययन केंद्र स्थापित हैं, जहाँ चीनी भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति पर शोध होता है , शंघाई के फुतान विश्ववविद्यालय में गाँधी अध्ययन केंद्र स्थापित है , जहाँ गाँधी जी के दर्शन पर शोध अध्ययन होता है i इसके अलावा ५० से अधिक विश्वविद्यालयों में बौद्ध अध्ययन केंद्र हैं जो परोक्ष – अपरोक्ष रूप से भारत से जुड़ा हुआ है i इसके अलावा चीनी विद्वान भारतीय संस्कृति

एवं समाज को समझने के लिए अन्य भारतीय भाषाओँ का भी अध्ययन कर रहे हैं जिसमें संस्कृत ,पाली, हिंदी ,तमिल, पंजाबी, गुजराती , बंगाली, उर्दू आदि भाषाएँ शामिल हैं, बंगाली और उर्दू में स्नातक पाठ्यक्रम है , अन्य भाषाओँ में १-२ वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम है i भारत –चीन सांस्कृतिक संबंध को नई दिशा देने के लिए वर्ष २०१५ में "भारत – चीन योग विश्ववविद्यालय" की भी स्थापना हुई जिसका उदेश्य योग अध्ययन के माध्यम से दोनों देशों के मध्य के दो हज़ार के सांस्कृतिक अध्ययन को बढ़ावा देना है i

चीन में हिंदी भाषा को प्रारंभ हुए लगभग आठ दशक हो चुके हैं I इन अस्सी वर्षों चीन में हिंदी का विकास कई चढाव -उतार से गुजरा है i चीन के हिंदी शिक्षण को पांच भागों में बांटा जा सकता है ,प्रथम चरण १९४२ से वर्ष १९४८ तक था , जो चीन में हिंदी शिक्षण का प्रारंभिक काल था i द्वितीय चरण, वर्ष १९४९ से १९६८ तक था जिसमें हिंदी का व्यापक विकास हुआ i तृतीय चरण वर्ष १९६६ से १९७६, चतुर्थ चरण १९७६ से २००५, पंचम चरण २००५ से वर्तमान समय तक है I

अब प्रश्न यह है कि विगत दो दशक में चीन में दस से अधिक नए विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्यापन प्रारंभ हुई है, आखिर इसका क्या कारण है i चीन में हिंदी का यह विकास बहुत अधिक अप्रत्याशित नहीं है i चीन में भारतीय संस्कृति की जड़े बहुत गहरी हैं i भारत एवं चीन के मध्य दो सहस्त्र वर्षों के सांस्कृतिक आदानप्रदान का इतिहास रहा है i दोनों देश सदियों से एक दुसरे की सभ्यता संस्कृति को प्रभावित करते आ रहे हैं i पहली शताब्दी में भारत से बौद्ध धर्म के चीन में प्रवेश करने बाद अनेक भारतीय विद्वानों ने चीन की यात्रा की और उनमें से असंख्य चीन की मिट्टी में ही अपनी अंतिम सांसे ली जिनमें धर्मरक्ष, कश्यप मातंग, बोधिधर्मन, कुमारजीव आदि प्रमुख हैं, जिन्होंने भारतीय ज्ञान –विज्ञान से चीनी संस्कृति को समृद्ध किया I भारतीय दर्शन, चिकित्सा विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, गणित, भाषा विज्ञान आदि का चीनी संस्कृति पर व्यापक प्रभाव पड़ा I प्राचीन काल में बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म एवं योग विज्ञान भारत – चीन सांस्कृतिक सम्बन्ध के मध्य सेतु का कार्य करते थे, वर्तमान समय में वहीँ कार्य हिंदी रूपी सेतु से हो रहा है I

पिछले दो दशकों में हिंदी शुरू करने वाले विश्वविद्यालयों की संख्या में इतनी वृद्धि का एक बड़ा कारण हिंदी का बाज़ार की भाषा भी होना है i आज हिंदी जन भाषा,राज्य भाषा, विश्व भाषा से होते हुए बाज़ार की भाषा बन गयी है ,फलस्वरूपआज हिंदी भारत से सुदूर चीन में भी युवाओं को नौकरी प्रदान करने में सक्षम है , जिसके कारण चीन में हिंदी भाषा दिन प्रतिदिन लोकप्रिय होती जा रही है i चीन में हिंदी पढ़ने वाले युवाओं को हिंदी भाषा के माध्यम से अच्छे रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं i

पिछले दो दशकों में चीन के पंद्रह से अधिक विश्वविद्यालयों में जिस तरह से हिंदी विभाग की स्थापना हुई है , उसके कारण चीन में हिंदी अध्यापकों की मांग भी पढ़ी है i जिसके कारण हिंदी पढ़ने एवं हिंदी में शोध करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि देखी जा रही है i बहुत से चीनी विद्यार्थी चीन में हिंदी में स्नाताक के उपरांत स्नातकोत्तर एवं पीएचडी के लिए भारत भी जा रहे हैं तथा वापस चीन आकर हिंदी शिक्षा में नौकरी के नए अवसर देख रहे हैं i

भारत स्थित चीनी कम्पनियों में नौकरी के अवसर उपलब्ध हो रहे है i कोरोना काल में भी चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार रहा है , विगत वर्षों में बहुत सी चीनी कंपनियों ने भारत में निवेश किया हैi भारत में निवेश करने वाली कम्पनियाँ भारत में व्यापार करने के लिए हिंदी की महत्ता को समझ रहे हैं i अभी भारत के मोबाइल बाज़ार में लगभग 81 प्रतिशत हिस्सेदारी चीनी मोबाइल कंपनियों की है , उन चीनी मोबाइल कम्पनियाँ उन चीनी युवाओं को अधिक वरीयता देती हैं जो चीनी तथा अंग्रेजी के हिंदी भाषा के विशेषज्ञ i

चीन में हिंदी में अनुवाद कार्य बड़े स्तर पर हो रहा है, अकादमिक स्तर भी और व्यावसायिक स्तर पर भी i जैसा की हाल के वर्षों में भारत- चीन व्यापारिक संबंध प्रगाढ़ हो रहे हैं, भारत से चीन जाने वाली व्यापारियों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है , जिससे चीन में हिंदी अनुवादकों की मांग बढ़ रही है i चीन में अकादमिक स्तर पर भी हिंदी- चीनी अनुवाद व्यापार पैमाने पर हो रहा है , जिसमें भारत- चीन सरकारों का योगदान भी महत्वपूर्ण है i वर्ष २०१६ में भारत – चीन सरकर ने सयुंक्त अनुवाद कार्यक्रम की घोषणा की , जिसमें चीनी सरकार २५ भारतीय साहित्यिक कृतियों का हिंदी से चीनी में अनुवाद करेगी , तथा भारतीय सरकार २५

चीनी साहित्यिक कृतियों का चीनी से हिंदी भाषा में अनुवाद करेगी , उदेश्य है भारत-चीन के वैसे पाठक जिन्हें चीनी – हिंदी नहीं आती , वे इस अनुवाद कार्यक्रम के माध्यम से एक दुसरे की संस्कृति को समझ सकें i हिंदी से चीनी में अनुवादित होने वाली साहित्यिक रचनाओं में सूरदास-ग्रंथावली , मुंशी प्रेमचंद रचना संचयन (गोदानउपन्यास और लघु कथाएं), अज्ञेय रचना संचयन (उनकी कवितायेँ और लघु कहानियां), भीष्म साहनी रचना संचयन (तमस उपन्यास और लघु कथाएँ), महादेवी वर्मा रचना संचयन (कवितायेँ) आदि हिंदी साहित्यिक कृतियाँ शामिल है I इस प्रकार के अनुवाद कार्यक्रम के माध्यम से चीन के हिंदी के जानकारों को अर्थालाभ का अच्छा अवसर प्राप्त होता है i हाल के कुछ वर्षों में चीन में हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता बढ़ी हैं, हिंदी फ़िल्में भारत से कई गुना अधिक वव्यापार चीन में करती हैं, हिंदी धारावाहिक भी चीन में बहुत लोकप्रिय हैं, हिंदी फ़िल्में एवं धारावाहिकें चीन में चीनी सबटाइटल के साथ प्रदर्शित होती हैं , ऐसे हिंदी से चीनी अनुवादकों की मांगे दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं i वर्तमान समय में भारत – चीन कुटनीतिक संबंध में भाषाई उपयोगिता का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है i दोनों देशों के मध्य भौगोलिक, राजनितिक, आर्थिक, राजनितिक कारणों से विदेश मंत्रालय में हिंदी के जानकारों की मांग बढ़ रही है , जिससे वैसे छात्र जो कार्यालयी काम को पसंद करते हैं, उनके लिए हिंदी के माध्यम एक अच्छा विकल्प बन रहा है i

चीन में मीडिया के क्षेत्र में भी हिंदी का वर्चस्व बन रहा है , चीन का चाइना रेडियो इंटरनेशनल लगभग बीस से ज्यादा विदेशी भाषाओँ में अपनी सेवा प्रदान करता है , इसमें हिंदी भी शामिल है , "भारत - चीन वार्ता " नाम से पत्रिका हर माह प्रकाशित होती हैं , पत्रकारिता में रूचि रखने वाले तथा बोल चाल एवं लिखित हिंदी में विशेष निपुणता रखने विद्यार्थी इन मीडिया समूहों में अच्छे वेतनमान पर कार्य करने का अवसर प्राप्त करते हैं I

बहुत सी पर्यटनकंपनियां जैसे क्वान्ग्चौ इंटरनेशनलटूरिज़्मकं, लिमिटेड हर वर्ष क्वान्ग्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय मेंआते हैं, वेअपने भारतीय पर्यटन भाग को संभालने के लिए हिंदी सिखने वाले विद्यार्थी की भर्ती करते हैं ।चीन से हर वर्ष बहुत से पर्यटक भारत घुमने आते हैं , कुछ यूनेस्को की सूची में शामिल स्थल देखने आते हैं तो कुछ बौद्ध स्थलों को

देखने आते हैं, योग एवं आयुर्वेद सीखने वाले भी चीनी पर्यटक बढ़ रहे हैं , वर्तमान में भारत में सस्ते चिकित्सा के लिए भी चीनी पर्यटक भारत आ रहे हैं , जिससे चीन में बहुत से पर्यटन सेवा देने वाली कम्पनियाँ शुरू हुई हैं जहाँ हिंदी पढने वाले विद्यार्थी आसानी से नौकरी प्राप्त कर रहे हैं I

चीन के लगभग छः सौ शहरों में योग केंद्र है , बड़े बड़े शहरों में तो बीस से अधिक योग केंद्र हैं , जहाँ चीनी योगाचार्यों के साथ साथ भारतीय योगगुरु भी विद्यादान करते हैं i आयुर्वेद भी बहुत लोकप्रिय है , बहुत से चीनी आयुर्वेद का प्रयोग दैनिक स्तर पर करते हैं i इसके कारण भी बहुत से चीनी जिज्ञासु स्वयं भी संस्कृत - हिंदी सीखते है I

निष्कर्ष - वर्तमान समय में चीन के विश्वविद्यालयों में हिंदी की प्रगति उल्लेखनीय है i आज चीन में हिंदी शोध की भाषा, सम्पर्क की भाषा , रोजगार की भाषा तथा व्यापार की भाषा बन रही है i हिंदी भाषा एवं साहित्य पर बड़े स्तर पर शोध हो रहे हैं i वाल्मीकि रामायण, पंचतंत्र, महाभारत, अभिज्ञानशाकुन्तल, रामचरितमानस, सूरसागर, फणीश्वर नाथ रेणु की मैला आंचल, प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियों का चीनी भाषा में अनुवाद हो चूका है i चीनी विद्यार्थी स्नातक एवं स्नातकोत्तर में भी लघु शोध निबंध लिखते है,इन लघु शोध निबंधों के माध्यम से चीनी विद्यार्थी भारतीय संस्कृति , दर्शन , वाणिज्य , भारतीय नारी की स्थिति आदि को समझने का प्रयास करते हैं i साथ ही चीनी विद्वत जन भी अपने तथ्यपरक शोधों से हिंदी भाषा को समृद्ध कर रहे हैं i हिंदी में उनके योगदान को देखते हुए प्रसिद्ध चीनी शिक्षक प्रोफेसर यू लोंग यू को वर्ष २०१६ में भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा भारत अध्ययन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए "भारत विद पुरस्कार "प्रदान किया गया i बीजिंग विश्वविद्यालय के हिंदी के प्रोफेसर च्यांग चिंग ख्वेई जिनका सूरदास पर विशेष शोध कार्य हैं को हिंदी में विशेष योगदान के लिए वर्ष २०१८ में भारत सरकार द्वारा "डॉ जार्ज गियर्सन पुरस्कार " प्रदान किया गया i वाल्मीकि रामायण, पंचतंत्र, अभिज्ञानशाकुन्तल का चीनी भाषा में पद्यानुवाद करने वाले प्रो. चि श्येनलिन को वर्ष २००८ भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित किया गया,उस समय अस्पताल में थे, भारत आने की स्थिति में नहीं थे , तब भारत के तत्कालीन विदेशमंत्री श्री प्रणब मुखर्जी स्वयं चीन जाकर अस्पताल में प्रो.

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

चि श्येनलिन को पद्मभूषण से सम्मानित किया, पद्मभूषण से सम्मानित होने वाले वे प्रथम चीनी विद्वान् हैं i

इसप्रकार यह स्पष्ट है कि चीन में हिंदी का पुष्पन पल्लवन तीव्र गति से हो रहा है i हिंदी भाषा विश्व की दो प्राचीन सभ्यताओं के मध्य सेतु का कार्य कर रहे हैं ,जिससे भारत – चीन सांस्कृतिक संबंध दिन प्रतिदिन प्रगाढ़ हो रहे हैं i कुल मिलाकर चीन में हिंदी उतरोत्तर वृद्धि कर रही है, पूर्व में में भारत – चीन के मध्य सांस्कृतिक सम्बन्ध को घनिष्ट करने में जो कार्य हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म एवं योग ने किया था , आज वहीँ कार्य हिंदी कर रही है I हमें पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में चीन के और अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी विषय में पाठ्यक्रम शुरू होंगें तथा हिंदी रूपी सेतु से भारत –चीन मैत्री सम्बन्ध और प्रगाढ़ होंगेI